

प्रेस विज्ञप्ति

स्वदेशी जागरण मंच द्वारा देश में विकसित अधिक उपज वाली GM सरसों का विरोध एक राष्ट्रीय शर्म की बात है।

नई दिल्ली (30 सितम्बर 2016) – भारत को मिली प्राचीन विज्ञान की विरासत के साथ-साथ आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों तथा इस दिशा में किए गए प्रयासों पर गर्व है। लेकिन, जन-सामान्य में विज्ञान के प्रति रुचि में कमी और विज्ञान को वांछित महत्व न दिए जाने के कारण खाद्य, चारा, रेशा तथा इंधन के क्षेत्र में राष्ट्रीय विकट समस्याओं जैसी वर्तमान और भावी चुनौतियों से निपटने के लिए, उच्च जोखिम युक्त लेकिन अधिक लाभ पहुंचाने वाले वैज्ञानिक प्रयोगों को करने की पर्याप्त क्षमता प्राप्त करनी होगी।

देश के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित अधिक उपज वाली GM सरसों प्रौद्योगिकी तथा धारा हाइब्रिड मस्टर्ड 11 (डीएचएम-11) में कृषि के क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता दिलाने की क्षमता है। GM सरसों प्रौद्योगिकी तथा धारा हाइब्रिड मस्टर्ड 11 (डीएचएम-11) का विकास दिल्ली विश्वविद्यालय के दक्षिण परिसर में डॉ. दीपक पटेल तथा ब्रैसिका दल ने विकसित किया है। GM सरसों का विज्ञान विश्वभर में स्वीकार किया गया है और कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया के किसान इसके मुख्य लाभ प्राप्तकर्ता हैं। विश्वभर में, भारत सहित कई देशों के उपभोक्ता कई वर्षों से खाना पकाने के वनस्पति तेल के लिए GM कनोला (कनाडाई सरसों) का आयात करके लाभ उठा रहे हैं और इसका स्वास्थ्य पर भी कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं देखा गया है। तथापि, भारत में कुछ समूहों ने आनुवंशिक रूप से परिवर्तन संबंधी प्रौद्योगिकियों का विरोध किया है और इसमें उन्होंने अपने आदर्शवादी मतभेदों (वाम और दक्षिण पंथियों, दोनों ने) को भुला दिया है तथा वे देश के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित अधिक उपज वाली GM सरसों के विरोध में एक साथ मिल गए हैं। उन्होंने एक विवादास्पद फ्रांसिसी वैज्ञानिक गिलेस-एरिक सेरालिनी पर भरोसा किया है जो देश के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित अधिक उपज वाली GM सरसों का विरोधी वैज्ञानिक है। इस प्रकार, उन्होंने भारत की सामान्य जनता को गुमराह किया है।

“डॉ. सेरालिनी के लिए भारत आने का स्वदेशी जागरण मंच का आमंत्रण स्वीकार करना अत्यधिक अनैतिक है तथा यह देसी वैज्ञानिक प्रयासों से संबंधित आंतरिक घरेलू मामलों में दखलदांजी है। विडंबना यह है कि स्वदेशी जागरण मंच दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा विकसित ‘मेक इन इंडिया’ GM सरसों को विफल बनाने के लिए अपने जैवप्रौद्योगिकी विरोधी अभियान के लिए विवादास्पद विदेशी वैज्ञानिक पर भरोसा कर रहा है। स्वदेशी जागरण मंच अपने मुख्य उद्देश्य तथा कृषि संबंधी एजेंडे से बहुत भ्रमित हो गया है” ऐसा साउथ एशिया बायोटेक्नोलॉजी सेंटर के अध्यक्ष डॉ. सी.डी. मायी का कहना है।

उपरोक्त भावनाओं का समर्थन एक विश्वविख्यात बेल्जियन वैज्ञानिक प्रो. मार्क वान मोंटागु ने किया है जिन्हें rDNA प्रौद्योगिकी की खोज का श्रेय दिया गया है और 2013 में विश्व खाद्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि 'यह विज्ञान तथा मानवता के लिए तिरस्कार व गहन शर्म का विषय है कि डॉ. सेरालिनी अब भी इस प्रकार का वक्तव्य दे रहे हैं जबकि चूहों में होने वाले नासूरों पर उनके प्रकाशनों को अस्वीकार कर दिया गया है। GM प्रौद्योगिकी सुरक्षित है तथा कनाडा में कनोला (कनाडाई सरसों) का उपयोग पिछले 20 वर्षों से अधिक की अवधि से किया जा रहा है। संकर किस्में तैयार करने के लिए बार्नेज-बारस्टार जीन विधि अधिकांश सब्जी, खाद्य तेल और फल उगाने वाले किसानों के लिए लाभदायक सिद्ध होंगी। निर्धन तथा शुष्क क्षेत्रों में कृषि से संबंधित 'Orphan फसलों' के संदर्भ में यह तकनीकी आशा की एकमात्र किरण है।'

फ्रांसिसी गिलेस-एरिक सेरालिनी व न्यूजीलैंड के लोउ गैलाघेर वर्ष 2010 में बीटी बैंगन पर भारत सरकार के निर्णय को प्रभावित करने का प्रमुख कुकृत्य कर चुके हैं। उस समय सेरालिनी तथा गैलाघेर ने ग्रीनपीस तथा जीएम विरोधी लॉबी के साथ सांठ-गांठ की थी और Bt बैंगन को 'असुरक्षित' करार देने में सफलता प्राप्त की थी जिसके परिणामस्वरूप फरवरी 2010 में Bt बैंगन पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। उल्लेखनीय है कि Bt बैंगन बंगलादेश में किसानों द्वारा 1914 से सफलतापूर्वक उगाया जा रहा है और उपभोक्ता इसका उपभोग भी कर रहे हैं।

बाद में, भारत सरकार ने सचिवों के समूह की सिफारिश पर एक समिति गठित की जिसमें भारतीय चिकित्सा विज्ञान परिषद (ICMR) के नेतृत्व में स्वतंत्र स्वास्थ्य विशेषज्ञ शामिल थे। इस समिति ने Bt बैंगन Event EE-1 के 'आविषालुता' तथा 'सुरक्षा' संबंधी सेरालिनी तथा गैलाघेर के दावों का मूल्यांकन किया तथा 28 फरवरी 2016 को हाल ही में भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया है कि 'Bt बैंगन अपने गैर-Bt बैंगन के समान ही सुरक्षित है'। ICMR की विशेषज्ञ समिति ने पिछले दो वर्षों के दौरान Bt बैंगन पर मौजूद कच्चे आंकड़ों, रिपोर्टों तथा टेस्टिमनी की समीक्षा की और यह निष्कर्ष निकाला कि 'विकासकर्ताओं द्वारा Bt बैंगन पर किए गए अध्ययन ICMR-DBT के खाद्य सुरक्षा दिशानिर्देशों 2008 के स्थापित प्रोटोकॉल के अनुसार हैं और कोडेक्स एलिमेंटेरियस (खाद्य एवं कृषि संगठन - विश्व स्वास्थ्य संगठन या FAO-WHO का एक निकाय) में निर्धारित दिशानिर्देशों और प्रोटोकॉल से भिन्न नहीं है। इस अध्ययन का यह निष्कर्ष कि Bt बैंगन मानवीय तथा पशुओं के स्वास्थ्य के प्रति सुरक्षित है, अब किसी भी प्रकार से विवादास्पद नहीं है।'

GM सरसों के मामले में स्वदेशी जागरण मंच और GM विरोधी सक्रियतावादियों ने यह आरोप लगाकर अपने हमले तेज कर दिए हैं कि GM सरसों एक शाकनाशी सहिष्णु फसल है। उल्लेखनीय है कि दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा विकसित GM सरसों एक ऐसी शुद्ध प्रौद्योगिकी है जिससे सरसों में संकर ओज का सृजन किया जाता है और जिसके परिणामस्वरूप पूर्णतः उर्वर संकर सरसों के बीज उत्पन्न होते हैं। शाकनाशी सहिष्णु बारजीन का उपयोग केवल बीजोत्पादन के उद्देश्य से किया जाता है। तथापि, यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि कुछ परपोषी खरपतवारों जैसे ओरोबैंके के कारण प्राथमिक रूप से जैविक प्रतिबलों या प्रतिकूल स्थितियों से प्रेरित व उत्पन्न होने वाली समस्याओं से निपटने के लिए शाकनाशी सहिष्णु प्रौद्योगिकी का उपयोग होना भी अपरिहार्य है। भारत के अनेक राज्य कृषि विश्वविद्यालयों ने ओरोबैंके के नियंत्रण के लिए परंपरागत सरसों पर ग्लाइफोसेट का छिड़काव करने की सिफारिश की है

तथा अपनी सस्यविज्ञानी विधियों में खेत फसलों में अन्य खरपतवारों के नियंत्रण के लिए ग्लाइफोसेट व ग्लूफोसाइनेट के छिड़काव की सिफारिश की है।

देसी GM सरसों पर स्वदेशी जागरण मंच के विरोध में गोआ के जाने-माने उद्योगपति श्री अशोक चोगले ने कहा है कि 'भारतीय वैज्ञानिक अति उत्कृष्ट प्रौद्योगिकियां विकसित करने में पूर्णतः सक्षम हैं, भले ही यह अंतरिक्ष अनुसंधान, कृषि अनुसंधान, सूचना प्रौद्योगिकी और चिकित्सीय क्षेत्र आदि किसी भी संबंधित हो। हमारे वैज्ञानिकों द्वारा विकसित देसी प्रौद्योगिकियों के इन क्षेत्रों तथा अन्य क्षेत्रों में श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त हुए हैं। हमें उन पर विश्वास करना चाहिए तथा उन्हें कार्य के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए। GM फसलें सटीक प्रजनन का परिणाम हैं जो अपनाई गई विभिन्न वैज्ञानिक विधियों जैसे खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए हमारे कृषि वैज्ञानिकों द्वारा लाई गई हरित क्रांति में विस्तार का योगदान करने के समतुल्य हैं। हमारे किसानों की ऐसी आधुनिक प्रौद्योगिकियों तक पहुंच होनी चाहिए ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था के वृहत हित में फसलों की उत्पादकता को सुधारा जा सके तथा हमारे प्रधानमंत्री द्वारा वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दुगुना करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।'

GM सरसों प्रौद्योगिकी तथा GM सरसों के संकर डीएचएम-11 पर और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए वेबसाइट www.sabc.asia कृपया देखें।

SABC के बारे में

साउथ एशिया बायोटेक्नोलॉजी सेंटर (SABC) एक अलाभकारी वैज्ञानिक संगठन है जिसका उद्देश्य ज्ञान के एक वृहत स्रोत के रूप में सेवा करना तथा जैवप्रौद्योगिकी के बारे में विज्ञान तथा हमारे समाज के बीच मौजूद ज्ञान के अंतराल को मिटाना है। इसका खाद्य, चारा तथा आहार सुरक्षा में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान है तथा भारत की जैव अर्थव्यवस्था के लिए वृद्धि संबंधी संभावनाओं को आगे बढ़ाने में भी अत्यधिक योगदान है। SABC के दो प्रमुख उद्देश्य हैं। समाज के साथ जैवप्रौद्योगिकी पर विश्वसनीय सूचना को बांटना ताकि जन-सामान्य में इसके प्रति समझ में सुधार हो तथा जैवप्रौद्योगिकी संबंधी अनुप्रयोगों को प्रयोगशाला से खेत तक हस्तांतरित करने में सुविधा प्रदान करना। SABC के बारे में और अधिक जानकारी के लिए देखें www.sabc.asia